एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

सरसों के प्रमुख रोग व उनका प्रबंधन

(*पुष्पेन्द्र सिंह शेखावत)
कृषि अनुसंधान केंद्र, श्रीगंगानगर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: shekhawatpushpendar@gmail.com

सरसों एक प्रमुख तिलहनी फसल है। सरसों की उत्पादकता व उत्पादन को घटाने वाले विभिन्न कारणों में रोगों का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। रोगों द्वारा सरसों की फसल को प्रतिवर्ष 10-70 प्रतिशत तक हानी पहंुचती है।

सफेद रोली रोग के लक्षण

रोगजनक : ***अलबूगो कैंडिडा-*** यह सरसों का महत्वपूर्ण रोग है। यह बीज व भूमि जनित रोग है। इस रोग के कारण बुवाई के 30-40 दिनो के बाद पतियों की निचली सतह पर सफेद रंग के ऊभरे हुए फफोले दिखाई देते है। फफोलो की ऊपरी सतह पर पतियों पर पीले रंग का धबे दिखाई देते है। उग्र अवस्था मे सफेद रंग के ऊभरे हुए फफोले पतियों की दोनो सतह पर फैल जाते है। फफोलो के फट जाने पर सफेद चूर्ण पतियों पर फैल जाता है। पीले रंग के धबे आपस मे मिलकर पतियों को पूरी तरह से ढक लेते है। जिनमे बीज नही बनते है।

नियंत्रण

- सरसों की बुवाई अक्टुबर के पहले पखवाड़े मे करे।
- गर्मिओ में गहरी जुताई करें
- उर्वरको के संतुलित मात्रा प्रयोग करें
- बीजों को जैव नियंत्रक ट्राइकोड्रर्मा पाउडर की 8-10 ग्राम प्रति किलोग्राम या फफूंदनाशी मेटालेक्सिल(एप्रोन 36 एस.डी) की 6 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोंपचार करे
- फसल बुवाई के 55-60 दिनो बाद या रोग के लक्षण दिखाई देने पर रिडोमील एम.जेड 0.2% का छिड़काव करे, आवश्यकता पड़ने पर 10 दिनो के अन्तराल पर छिड़काव को दोहराए।

पौध आर्द्र-गलन रोग के लक्षण : इस रोग का प्रकोप पौधे के भूमि के सतह या भूमि के अन्दर वाले भाग पर कवक के आक्रमण होने से जड़ पर जलसिक्त धबे बनकर तने को कमजोर कर देते है। जिससे तना सुख जाता है। अंत मे पौधा भूमि पर गिर जाता है।

नियंत्रण

- खड़ी फ़सल मे रोगकेलक्षण दिखाई देने परकार्बेन्डाजिम 12%+मेन्कौजेब 63% के मिश्रण का 0.2% के घोल का छिड़काव करे। आवश्यकता पड़ने पर 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव को दोहराए।

अंगमारी रोग के लक्षण : इस रोग से पतियों पर कत्थई भूरे रंग के उभरे हुये धबे दिखाई देते है, जिनके किनारे पीले रंग के होते है। देखने मे यह धबे आँख की तरह प्रतीत होते है। उग्र अवस्था मे यह धबे आपस मे मिलकर बड़े होजाते है जिससे पतिया पीली हो कर झड़ने लगती है।

नियंत्रण

- बीज को थायरम-75 डब्लू.पी 3 ग्राम या ट्राइकोड्रर्मा पाउडर 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोंपचार करे।
- 100 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद मे 10 किलो ट्राइकोड्रर्मा हरजेनियम मिलाकर 15 दिन तक रखे व बुवाई से पहले खेत मे छिड़ककर हल्की सिंचाई कर दे।

तुलासिता रोग के लक्षण : इस रोग के कारण पतियों की निचली सतह पर कपास कीत रह उभरी हुई सफेद भूरी फफूँद दिखाई देती है, जिससे पतियों की निचली सतह परहल्के भूरे बैंगनी धबे पड़ जाते है, जिसका ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है, उग्र अवस्था मे तना व पुष्पक्रम अतिवृध्दि के कारण फूल जाते है, फलियों मे दाने नही बनते है। इस रोग का प्रकोप सफेद रोली के साथ दिखाई देता है तो फसल मे ज्यादा नुकसान होता है।

नियंत्रण

- सरसों की बुवाई अक्टुबर के पहले पखावाडे मे करे।
- बीजों को मेटालेक्सिल (अप्रोनएस.डी) 6 ग्रामया ट्राइकोड्रर्मा पाउडर 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोंपचार करे।
- फसल बुवाई के 2 माह बाद या रोग के लक्षण दिखाई देने पर रिडोमील एम.जेड 0.2% का छिड़काव करे, आवश्यकता पड़ने पर छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर दोहराए.

स्केलेरोटीनिया(तना सड़न) रोग के लक्षण : यह रोग आज के समय मे सबसे खतरनाक रोग है। यह भूमि व बीज जनित रोग है। रोग के लक्षण सबसे पहले लम्बे धबो के रूप मे तने पर दिखाई देते है। जिन पर कवक जाल के रूप मे दिखाई देती है, उग्र अवस्था मे तना फट जाता है व पौधा मुरझाकर सुख जाता है, संक्रमित भाग पर काले रंग के गोल कवक के स्केलेरोशिया दिखाई पड़ते है। अधिक नमी के दिशा मे रोग का प्रकोप ज्यादा होता है।

नियंत्रण

- बीजों को कार्बेन्डाजिम+मेन्कौजेब(साफ) 2 ग्राम या ट्राइकोड्रर्मा पाउडर 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोंपचार करे।
- खड़ी फसल मे बुवाई के 50-60 दिनबादया रोग के लक्षण दिखाई देने परकार्बेन्डाजिम 12% +मेन्कौजेब63% के मिश्रण का 0.2% के घोल का छिड़काव करेव आवश्यकता पड़ने पर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव को दोहराए।
- पौधे से पौधों व कतार से कतार की दूरी पर्याप्त रखे।
- रोगी पौधे को उखाड़कर नष्ट कर दे।

छाछ्या रोग के लक्षण : यह एक कवक जनित रोग है,जो शुरूआती अवस्था मे पौधे की पतियों व टहनियों पर मटमेले सफेद चूर्ण के रूप मे दिखाई देती है।जो बाद मे सम्पूर्ण पौधे पर फैल जाती है। जिसके कारण पतिया पीली होकर झड़ने लगती है।

नियंत्रण

- इस रोग के नियंत्रण हेतु खड़ी फसल मे 20-25 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर या 0.2% घुलनशील गंधक का छिड़काव करे या केराथियान-एल.सी का 0.1% घोल का छिड़काव करे। आवश्कतानुसार 15 दिनो के बाद छिड़काव को फ़िर से दोहराए।